हज़ारनि जी हिक, ग़ाल्हि बुधाई सतिगुरूअ
खालिकु वसे खलिक में, खलिक मंझि खालिक
पेही ड्रिसु परितीत सां, सामी रखी सिक,
कोहु चटीं थो चिक, दरि दरि देवाननि जां.

सामी साहब कहते हैं कि सतगुरु ने लाख मोल की एक बात बतायी। उन्होंने कहा कि परमेश्वर लोक (सामान्यजन, जनता) में निवास करते हैं और जन परमेश्वर में निवास करते हैं। हे मनुष्य! यह तथ्य तुम अपने भीतर झाँक कर अनुभव करो। यह काम मन में प्रेम धारण कर करने से तुम भीतर ही परमेश्वर को पा सकोगे। तुम क्यों परमेश्वर को बाहर ढूँढने के लिए दर दर भटकते रहते हो?

मनुष्य को अपने जीवन में बहुधा सभी बातें सीखनी पड़ती हैं। किसी विद्या, कला या शास्त्र आदि का ज्ञान प्राप्त करना पड़ता है। विज्ञान का भी तंत्र आदि सीखना पड़ता है। इन सबके लिए किसी अध्यापक ज्ञाता अथवा गुरु आदि की आवश्यकता होती है। आत्मज्ञान, अंतर्ज्ञान अथवा परमेश्वर के दर्शन करने के लिए सद्गुरु से दीक्षा, गुरु-मंत्र लेना पड़ता है। ब्रह्मज्ञानी सतगुरु हमारे मार्गदर्शक बनते हैं। उनकी कृपा और उपदेश आदि द्वारा शिष्य का अज्ञान सतगुरु ही अपने शिष्य को अपने बोध-वचनों द्वारा यह समझाते हैं कि परमेश्वर सृष्टि का निर्माता एवं नियंता है। वह सर्वेश्वर है, सृष्टि के कण-कण में परमेश्वर का निवास है। वह घट-घट वासी है। जिस प्रकार परमेश्वर सारे विश्व में व्याप्त है, उसी प्रकार सारा विश्व परमेश्वर में व्याप्त है। परमेश्वर जिस प्रकार लोक में सभी प्राणियों/मनुष्यों में निवास करते हैं, उसी प्रकार सभी प्राणि मात्र, जन आदि भी परमेश्वर में निवास करते हैं।

यह अनमोल बात, आत्मा-परमात्मा की एकरूपता का रहस्य सतगुरु ही शिष्य को बतलाते हैं। सामी साहब भी सतगुरु की बात समझाते हैं। करुणा के सागर सतगुरु शिष्य एवं सामान्य जनों को अध्यात्म-उपदेश का अमृत पान कराते हैं। परमेश्वर को अपने मन में ही देखने और पाने की बात करते हैं। परमेश्वर की प्राप्ति एवं दर्शन मन-मंदिर में मिल सकते हैं। अत: बाहर ढूँढने/भटकने की आवश्यकता नहीं है। आत्मस्वरूप सच्चिदानंद ही विश्व का आधार है। वह हमारे भीतर बसा हुआ है। उसे पहचानो ।

कस्तुरी तन में बसै, मृग ढूँढै बन मांहिं।
ऐसे घट-घट राम हैं, दुनिया देखे नाहिं।।

■